राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)
बी.पी.ए. द्वितीय वर्ष नियमित पाठ्यक्रम
(गायन/स्वरवाद्य सहायक विषय/इलेक्टिव ओपेन सब्जेक्ट)

लोकसंगीत :–प्रदर्शन एवं मौखिक

नियमित

2021–2022

समय :–3 घण्टे पूर्णांक :– 80

मौखिक

1. लोक संगीत की परिभाषा, परिचय, क्षेत्र एवं विषेषताएं।
2. लोक संगीत के अंतर्गत पंडवानी विधा का सामान्य परिचय।
3. तीजनबाई एवं शारदा सिन्हा का परिचय एवं लोक संगीत में योगदान।
4. लोकनृत्य एवं लोकगीतों का महत्व, संरक्षण की आवश्यकता।
5. लोकगीत के प्रकारों–चैती, कजरी, दादरा का उपशास्त्रयीय संगीत में स्थान एवं महत्व।
6. लोकगीतों के स्वरूप एवंप्रकार यथा–
   1. संस्कार संबंधी 2. ऋतुसंबंधी 3. श्रम संबंधी 4. उत्सव संबंधी 5. ऐतिहासिक एवं राष्ट्रीय।

प्रदर्षन

1. अलंकार का सामान्य ज्ञान (जिस स्वर या थाट के स्वर उस गीत में लगते ह उन्हीं थाटों या स्वरों में अलंकार कराना है।)
2. तालों का व्यवहारिक ज्ञान।दादरा कहरवा दीपचन्दी आदि। (लोक गीतों में प्रयोग होने वाले ठेके एव तालों का ज्ञान)
3. अपन प्रदेष के अंचलों के एक–एक लोकगीतों का निम्नानुसार व्यवहारिक ज्ञान–
   1. संस्कार गीत 2. ऋतुगीत 3. श्रम गीत 4. उत्सव गीत 5. मनोरंजन गीत
4. सीखी हुई किसी लोक रचना का हार्मोनियम पर बजाकर गाने का अभ्यास।
5. अपने प्रदेष के अंचला में प्रचलित लोकसंगीत एवं लोक संस्कृतिका संबंध निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर–
   1. गीत 2. वाद्य 3. लय व ताल 4. वेषभूषा व आभूषण 5. विभिन्न अवसरों के लोक वाद्य
6. लोक गीतों का फिल्मी गीतों पर प्रभाव एवं लोकनृत्य और योग का संबंध।

संदर्भ ग्रंथ की सूची–

1. लोक गीतो का सांस्कृतिक भूमि – श्री विद्याचरण
2. फोक सांग्स ऑफ इंडिया – श्री हेमाल्स
3. भारत के लोक नृत्य – श्री लक्ष्मी नारायण
4. राजस्थान का लोकसंगीत – श्रीदेवीलालसांभर
5. मालवा के लोक गीत – श्री चिंतामणि उपाध्याय
6. फोककल्चर एवं ओर लटेडिरान्स – श्री एस.एल. श्रीवास्तव

7. भोजपुरी लोकगीत	–	श्री कृष्णदेवउपाध्याय
8. मैथली लोक गीता का अध्ययन	–	डॉ. तेजनारायण लाल
9. भोजपुरी लोक संस्कृति एवं हिन्दुस्तानी संगीत	–	डॉ. संजय कुमार सिंह
10. अवधि लोकगीत और परम्परा	–	श्री इंद्रप्रकाषपांडे
11. बुन्देलखण्ड के लोकगीत	–	डॉ. उमाषंकर श क्ला
12. निमाड़ी लोकगीत	–	डॉ. रामनारायण अग्रवाल
13. विन्ध्य के आदिवासी के लोकगीत	–	श्री चंद्रजैन
14. मालवी लोकगीत एवं विवेचनात्मक अध्ययन	–	डॉ. चिन्तामणि उपाध्याय
15. कल्लू के लोकगीत	–	श्री एस.एस. रणधाना